राष्ट्र सेविका समिति के 11 से 13 नवम्बर 2016 तक आयोजित अखिल भारतीय कार्यकर्ता प्रेरणा शिविर, नई दिल्ली के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. **'स्त्री राष्ट्र की आधारशिला है।'** इस मूल मन्त्र की स्वीकारोक्ति हमारे सनातन समाज में सदा से रही है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के ही दर्शन के अनुरूप कार्य में समर्पित राष्ट्र सेविका समिति, भारत की स्त्रियों की एक अग्रणी संस्था है। हम सभी यह जानते है कि इसकी स्थापना 1936 में विजयादशमी के दिन वर्धा में हुई थी। श्रीमती लक्ष्मीबाई केळकर (मौसीजी) के निष्काम समर्पण से उपजा वैचारिक सांगठनिक बीज आज एक विशाल वट–वृक्ष बन चुका है। संघ से वैचारिक रूप से अनुप्राणित होने पर भी यह एक स्वतन्त्र संगठन है। यह सभी को स्पष्ट है कि यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की महिला शाखा नहीं है।

2. श्रीमती लक्ष्मीबाई केळकर (मौसीजी) इसकी प्रथम प्रमुख संचालिका थीं। उनके सुयोग्य मार्गदर्शन में इस संकल्प यात्रा ने जो ऐतिहसिक स्थान बनाया है, वह अपने आप में अतुल्य है। 'स्त्री राष्ट्र की आधारशिला है।' सेविका समिति ने इसके लिए जो सकारात्मक कार्य किए हैं उसकी सर्वत्र स्वीकारोक्ति भी है और प्रशंसा भी। मैं भी आज इस मंच से इस पुनीत सकंल्प के विराट स्वरूप का अभिनन्दन करती हूं।

3. यह हमारे लिए गौरव और सम्मान का विषय है कि किस प्रकार आदरणीया मौसी जी के संकल्प को हमारी बहनों ने अपने जीवन के मन्त्र के रूप में लिया।

आज यह हर्ष का दिन हमारे जीवन में आया है। मैं वर्तमान प्रमुख संचालिका वंदनीय शांतक्का जी का भी अभिनन्दन करती हूँ कि वह इतनी कुशलता और सेवा भाव से इस कार्य को आगे बढ़ा रही है।

4. भारतीय समाज रचना को यदि हम धैर्य से समझे तो पायेंगे कि ब्रह्ममयी चैतन्य शक्ति के अंशरूप नारी की उपस्थिति के चहूँ ओर हमारा अस्तित्व बना हुआ दिखाई देता है। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने समाज धारणा के लिए नारी की सुप्त शक्तियों को आधार रूप माना है। हम देखते है कि प्रत्येक कार्य में शक्ति अंतरनिहित होती है। उस शक्ति का जागरण करते हुए, शक्ति को संघटित करते हुए, उसे राष्ट्र निर्माण कार्य में लगाने का विलक्षण ध्येय आधुनिक ऋषिका वं. मौसीजी ने अपने सामने रखा और उस उद्देश्य की पूर्ति हेतु राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना की।

5. समिति ने अपने विविध आयामों और प्रकल्पों के माध्यम से जो विशिष्टता अर्जित की है, वह सराहनीय है। आज दैनंदिन, साप्ताहिक तथा नियमित रूप से लगनी वाली शाखायें परिवर्तन की वाहक बन चुकी हैं। इन शाखाओं में सेविकाओं को शारीरिक शिक्षा, बौद्धिक विकास, मनोबल बढाने के लिये विविध क्रियाकलाप और अभ्यास होते हैं, स्वावलम्बन से युक्त विकास सेविका की पहचान है। अपनत्व की भावना से आरोग्य शिविर, छात्रावास, उद्योग मंदिर, बाल मंदिर संस्कार वर्ग सहित विभिन्न सेवा कार्य समिति के माध्यम से भारत ही नहीं विश्व के ऐसे स्थानों पर, जहाँ हिन्दू बहनें रहती हैं, वहां हिंदुत्व का प्रसार तथा हिंदु भगिनियों के संगठन, जो उदाहरण समिति ने दिया है, वह हमारी बहनों को प्रणाम का अधिकारी बनाती है।

6. भारत भूमि मातृभूमि है, पुण्य भूमि है, संस्कार भूमि है। इस भाव से, स्वाभिमान से, जीवन चले, यह कर्तृत्व भाव होना चाहिए कि मानवीय मूल्यों का रक्षण हो एवं उस हेतु अपने जीवन को समाज के लिए अर्पित करने की भावना सेविका समिति में अनायास ही, सहज रूप में निर्माण होती है। सेविका समिति के कार्यो और कार्यक्रमों में सहभाग ऐसी ही उदात्त भावना को विकसित करता है।

7. संजीवनी अर्थात क्षीण प्राणशक्ति का पुनरूज्जीवन/प्राणशक्ति के कारण ही शरीर के सभी अंगोपांग संपूर्ण सामंजस्य से काम करते है। यह ऊर्जा हृदय से निकलनेवाली रक्तवाहिनियाँ शरीर के आखिरी छोर तक पहूँचाती है–चैतन्यता प्रदान करती है। व्यक्तिगत जीवन में शरीर में प्राणशक्ति का संचार रूकने का अर्थ मृत्यु होता है, उसी प्रकार राष्ट्र जीवन में प्राणशक्ति का अर्थ हमारी संस्कृति, जीवनदृष्टि एवं जीवनमूल्य हैं। इन वृक्षों को हरे–भरे रखने की जिम्मेदारी हमारी है। उसकी अनुभूति–विचार–व्यवहार के प्रवाह का खण्डित होना, राष्ट्र की चेतना के लुप्त होने जैसा ही है। भारत की परम्परा में मानव ही नहीं, अपितु चराचर सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याण का विचार एवं संस्कार समाहित है। अतः, इसे जीवित एवं प्रबल रखना अनिवार्य है। प्रबल राष्ट्र की पहचान विश्व मंच पर होती है और वह विश्व गुरू कहलाता है।

8. समिति की सेविका का जीवन ऐसा है जिसमें शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा का समन्वित विकास राष्ट्र सेवा के लिए होता है एवं ऐसा सहज संकल्प करके वे जीवन के व्यवहार में सद्गुणों को उतारने का प्रयास करती हैं। हमने यह अनुभव किया है कि समिति की उन सखियों/बहनों से मिल कर किसी सेवा कार्य को करते हुए मन की

नाराजगी, उद्विग्नता, निराशा सहज ही भाग जाती है। खेल, व्यायाम, योगासन, गणसमता के साथ–साथ जीवन में अनुशासन, समयपालन, आज्ञापालन, नेतृत्व गुणों का विकास, जीवन का अंग स्वभाव बन जाता है।

9. समिति में व्यक्तित्व का भी विकास होता है, क्षमताओं का भी विकास होता है किन्तु हम कोई व्यक्तित्व विकास की संस्था नहीं है, हम स्त्री को समाज की उस मूल आश्रयी जीवन्त इकाई के रूप में स्वीकार करके चलते है जिससे हमारे परिवार और समाज की श्रेष्ठता का, उसके सद्गुणों का, व्यवहार के परिष्कार का यज्ञ आरम्भ होता है। वह इस यज्ञ की पुरोहित स्त्री है, कभी मां के रूप में, कभी बहन के रूप में, कभी बेटी के रूप में तो कभी पत्नी के रूप में।

10. समिति के कार्यो में 'मैं नहीं, तू नहीं' का अनोखा संस्कार **'आत्मनो मोक्षार्थं जगद् हिताय च'** श्रद्धा का संस्कार विकसित होकर जीवन में उतरता चला जाता है। यह संस्कारित निष्ठा राष्ट्र संस्कृति धर्म की संजीवनी है। यह संजीवनी बडे भाग्य से, तपस्या से मिलती है। **'प्रसादात तव एव अत्र'** पूर्व जन्मों के पुण्य के कारण मिलती है।

11. नारी ही स्वयं प्रकृति है, सृष्टि की आद्य शक्ति है, इस संकल्पना से प्रेरणा लेकर भारतीय संस्कृति प्रवाहित हुई। इस संपूर्ण चराचर जगत् में जहाँ भी जो कुछ दिखाई देता है, वह उसी आद्याशक्ति की प्रभा से आलोकित है, अतः चैतन्यमय है। **इस आद्याशक्ति को हम महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली और उस परब्रह्म की शक्ति के**

रुप में मानते है। प्रत्येक स्त्री उस शक्तितत्त्व का अंश है। समिति इस गौरवपूर्ण प्रेरणादायी भाव को जागृत करने का महती एवं पुनीत कार्य कर रही है।

15. अपने घर, परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति श्रद्धाभाव से व्यवहार करना हम सभी का कर्त्तव्य है। वं. मौसीजी, वं. ताईजी से लेकर आज की छोटी सेविका तक अपने अपने स्तर पर, अपनी–अपनी पद्धति से घर, परिवार, समाज और राष्ट्र में योगदान कर रही है। यही भाव निरंतर बना रहे, इसी में हमारे पुरुषार्थ की सफलता और सार्थकता है।

16. **"शिवभावेन जीवसेवा"** भारतीय जीवन पद्धति में सेवा निर्लिप्तता के भाव से होनी चाहिए। इस मानवीय गुण का बहुत महत्त्व है। सेवा से विश्व पर भी विजय प्राप्त करने की उम्मीद जगाई जा सकती है। सेवा अर्थात अन्य जीवों की आवशयकता पड़ने पर यथासंभव श्रद्धा भाव से सहयोग करना है। हमारे ऋषि–मुनियों ने **'सेवा धर्मो परम् गहनः** ऐसा कहकर उसकी महत्ता को बताया है।

17. समाधि सुख का आनंद लेने में लीन स्वामी विवेकानंद को भगवान रामकृष्ण ने कहा, 'अरे तुम्हारे अगणित बांधव अज्ञानांधकार में डूबे है, दुःख वेदना से कराह रहे हैं, तो स्वार्थवश तुम अकेले इस आनंद का उपभोग कैसे ले सकते हो।', अपने गुरूजी के शब्दों का मर्म समझकर स्वामीजी जीवन के अंतिम क्षण तक सेवा कार्य में रत रहे। उनके शिष्यों का भी समाज की ओर देखने का दृष्टिकोण बदल गया। विश्व जीव–सेवा से व्याप्त है, अतः उसकी सेवा ही उनका जीवनोद्देश्य बना।

17. राष्ट्र सेविका समिति के नाम में ही सेवा निहित है। सेवा करनेवाली वह सेविका। श्वास–प्रश्वास जैसा ही सेवा यह विशेष गुण है। सेवा स्त्री का स्थायी भाव है। समिति कार्य योजना में भी सेवा का विशेष महत्त्व है। राष्ट्र की सेवा, राष्ट्र की देह रूप भूमि और वहाँ रहनेवाले लोगों की सेवा। सृष्टि के प्रत्येक घटक की सेवा अर्थात उनका दोहन, पोषण, मर्यादित उपभोग, उनका संरक्षण करना। राष्ट्र की आत्मा–उसकी जीवनपद्धति, संस्कृति, इतिहास का रक्षण और गौरव बढाना। यही उसकी वास्तविक सेवा है। भूमि की उर्वरा शक्ति बढाना, नैसर्गिक साधनों का ही उपयोग करना, समाज में पारस्परिकता का भाव बढाना, शारीरिक, मानसिक और आर्थिक स्वास्थ्य को सुरक्षित रखना एवं विकसित करना सेवा के कुछ आयाम है।

18. राष्ट्रीय जीवन मूल्यों को धारण करना–करवाना, राष्ट्रभक्ति की एवं समर्पण की भावना को मजबूत करना ही राष्ट्र की सेवा है। सेवा के अनेक आयाम जैसे आरोग्य शिविर, छात्रावास, गृह उद्योग केंद्र, संस्कार केंद्र, शिक्षा केंद्र, भजन, कीर्तन शिबिर इत्यादि हो सकते है।

19. वं. मौसीजी एवं ताईजी उत्तम परिचारिका थी। सेवा एवं अपनत्वयुक्त करूणाभाव उनके मन में था। वे हमेशा दूसरों की, विपत्ति एवं दुःख तकलीफ से ग्रस्त लोगों की सहायता करती थीं। वे कहती थीं कि अविकसित बस्ती में बिना ताम–झाम के जाओ, वहाँ के लोगों के साथ उठो, बैठो, उनकी आवश्यकताएँ समझ लो, उनके आतिथ्य को प्रेम से स्वीकार करो, और उनमें से एक बनकर व्यवहार करो। एकात्मता, समरसता को उन्होंने आत्मसात् कर लिया था।

23. वनवासी क्षेत्रो और पूर्वांचल के लिए समिति का कार्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है। असम में गोसाई गाँव, गुवाहाटी, एनसी हिल्स जिले में हॅपलाँग में छात्रावास है। वहाँ के अपने बहनों के लिए 'भारत मेरा परिवार है, इसकी अनुभूति देने का संकल्प लेकर समिति द्वारा छात्रावास चलाए जाते है। समिति के छात्रावासों में रसोई से लेकर कंप्यूटर तक का प्रशिक्षण दिया जाता है।

25. आज के इस महत्वपूर्ण अवसर पर हम सभी संकल्पित हो अपने कर्म क्षेत्र में हम परिवर्तन को और अधिक शक्ति सामर्थ्य से लेकर आएँगी, संगठन और विचार का प्रसार करेंगी। यही हमारी भारत माता के प्रति सच्ची पूजा अर्चना होगी।

''जय मातृ शक्ति

जय मातृभूमि।''

———————